पाठ-21

आओ दीप जलाएँ

– भानुप्रताप शुक्ल

आइए सीखें

■ प्रेरक प्रसंग के माध्यम से महापुरुषों के जीवन प्रसंग ■ उपसर्ग ■ मुहावरे ■ विलोम शब्द।

''भंते! आप बुद्ध हैं और हम बौद्ध, परंतु हमें मिला क्या? क्या आपको वह मिला, जिसके लिए आपने तप किया था? क्या आप और हम उस बुढ़ापे, बीमारी और मृत्यु से मुक्त हो गए भंते? ऐसा क्यों होता है भंते कि हम जो चाहते हैं, वह नहीं होता?''

''आनंद!'' भंते बोले, ''चाहने-चाहने की बात है वत्स! तुम शरीर की बात कर रहे हो, तुम्हारे प्रश्न केवल शरीर से जुड़े हैं, मैं मन की बात करता हूँ और मन से बात करता हूँ। मन बूढ़ा न हो, मन बीमार न हो, मन मरे नहीं, मेरी इस साधना की सिद्धि ही बुद्ध होना, बोध प्राप्त करना है। बात विश्लेषण की नहीं, प्रतीति की है। प्रतीति होगी तो प्रेम होगा। प्रेम होगा तो आस्था जन्मेगी। आस्था उपजेगी तो निष्ठा का निर्माण करेगी। निष्ठा में से करुणा का उदय होगा। करुणा सेवा-कर्म की प्रेरणा देगी, संसार सुखी बनेगा। शरीर नहीं रहेगा तो भी साधना और आनंद की यात्रा चलती रहेगी वत्स।''

बुद्ध के उत्तर से आनंद का चित्त शांत नहीं हुआ। पूछा, ''भंते! तो फिर इस कुटी और कुटी के बाहर चारों ओर अंधकार क्यों है? यह कैसे मिटेगा?'' तथागत स्मित हुए। बोले, ''आनंद! अंधकार इसलिए है कि प्रकाश अनुपस्थित है। एक दीया जला दो, अँधेरा मिट जाएगा।''

आनंद आतुर हो उठे, ''पर कब तक के लिए भंते?'' तथागत ने बताया, ''जितनी दीये की आयु होगी, उतने समय के लिए। यदि दीया, तेल और बाती का संयोग स्थायी और स्थिर होगा तो प्रकाश भी स्थिर और स्थायी होगा। यह न भूलो आनंद कि अंधकार के पाँव नहीं होते, वह पराक्रमी नहीं, कमजोर

शिक्षण संकेत

▸ छात्रों से शुद्ध उच्चारण के साथ पाठ पढ़वाएँ ▸ पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ वाक्य प्रयोग से समझाएँ ▸ विलोम शब्द और उपसर्ग की जानकारी दें ▸ मुहावरों के अर्थ और उनके प्रयोग से छात्रों को परिचित करवाएँ ▸ छात्रों से पाठ का सार स्पष्ट करने को कहें।

और कायर होता है। घटाटोप अँधियारे का अंत करने के लिए एक चिनगारी ही काफी होती है।''

आनंद रुका नहीं। बोला, ''यह तो हुई बाहर के अँधियारे की बात। अंदर के अँधियारे का क्या करूँ?'' तथागत बोले, ''तुम्हारे अंदर का जो प्रकाश बाहर का अंधकार देख रहा है, उसे अपने अंदर उतार लो। आँखों की ज्योति आत्मा में जला दो। चर्मचक्षुओं का जो प्रकाश बाहर का अँधेरा देख रहा है, वह अंदर का भी अँधेरा देखने लगेगा, तो अंतर्मन भी प्रकाशित हो जाएगा। आत्मदीप जल उठेगा।''

पता नहीं यह बात आनंद की समझ में आई कि नहीं, उसने तथागत की बात समझी कि नहीं, लेकिन हम भारत के लोगों ने इसे इस तरह समझा है कि अँधेरे को शाप देने, गाली देने और कोसने से अंधकार नहीं मिटता। उसके लिए अपनी ड्योढ़ी पर और आँगन में दीया जलाना होता है। हम अंधकार से लड़ते नहीं, प्रकाशोत्सव मनाते हैं। जगमग-जगमग दीप जलाते हैं, लेकिन इसमें एक अपवाद है। वह यह कि जो केवल अपने घर में दीया जलाकर केवल अपना प्रकाशोत्सव मनाते हैं, केवल अपनी ड्योढ़ी झालरों से सजाते हैं, उनका घर तो चमक उठता है, लेकिन उनका यह प्रकाशोत्सव बाहर के अंधकार को उनके अंदर धकिया देता है। यदि किसी के घर का प्रकाश उसके पड़ोसी को चिढ़ाने लगता है तो अंधकार मिटता नहीं, बढ़ता है, बलवान होता है।

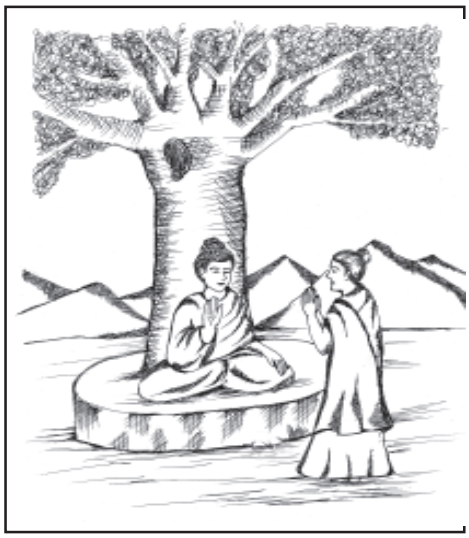

आयातित चीजें और बातें हम भारत के लोगों को आजकल बहुत अच्छी लगने लगी हैं इसलिए एक आयातित उदाहरण देता हूँ। जापान के एक संत रिजाई अपनी कुटी में बैठे दीया जलाकर कुछ पढ़ रहे थे। रात का दूसरा पहर था। आहट सुनी, कोई दबे पाँव छिप-छिपकर आ रहा है। वह चोर था। रिजाई ने दीया बुझा दिया तो चोर को पता चल गया कि कोई है। वह उलटे पाँव जाने लगा। रिजाई ने कहा, ''रुको भाई, क्यों भाग रहे हो? आए हो तो खाली हाथ न जाओ। पहले से बताया होता कि तुम आने वाले हो तो मैं दिन में कुछ माँगकर इकट्ठा कर लेता। मेरे पास कुछ है नहीं, फिर भी तुम यह आशा लेकर आए हो कि इस कुटिया में तुम्हारी जरूरत की चीजें होंगी। यदि खाली हाथ चले जाओगे तो इस कुटिया का ही नहीं, भगवान का भी अपमान होगा कि उसके रिजाई ने घर आए व्यक्ति को खाली हाथ लौटा दिया। मेरे पास और कुछ नहीं, केवल यह कंबल है। इसे ले जाओ। मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा।'' संत रिजाई ने अपना कंबल उसे दे दिया। कंबल लेकर वह जाने लगा, तो उन्होंने उसे रोका, ''ठहरो भाई! मैंने तुम्हें कंबल दिया, तुम मुझे धन्यवाद दिए बिना ही चले जा रहे हो।'' चोर ने धन्यवाद दिया और चलता बना। रिजाई संत का कंबल बहुत प्रसिद्ध था। जापान के लोग उसे पहचानते थे। चोर पकड़ा गया। न्यायालय में मुकदमा चला। न्यायाधीश रिजाई

संत का शिष्य था। वह भी कंबल को पहचानता था।

न्यायाधीश सजा का निर्णय सुनाने ही वाला था कि संत रिजाई ने न्यायालय में प्रवेश किया। बोले, ''रुकिए! यह चोर नहीं है। इसने चोरी नहीं की है।'' न्यायाधीश सहित सभी लोग सन्न रह गए। वे लोग कुछ कहें, इसके पूर्व ही रिजाई संत ने पूछा, ''क्या कोई चोर चोरी करने के बाद उस घर वाले को धन्यवाद देता और प्रणाम करता है? यह चोरी करने आया था, यह सच है, लेकिन मेरे पास इस कंबल के अतिरिक्त चुराने लायक कुछ था ही नहीं तो रात के अँधेरे में इसने यह कंबल ले लिया और मुझे धन्यवाद भी दिया। इसे कंबल की ज़रूरत मेरी तुलना में अधिक रही होगी, नहीं तो इसे लेता ही क्यों? आप इसे दंड दे सकते हैं, सरकार इसे जेल में बंद कर सकती है, लेकिन इसके पूर्व आप ऐसी व्यवस्था करें कि किसी को ऐसा अभाव और ऐसी विपन्नता न हो कि उसे चोरी करनी पड़े और उसकी सहायता के लिए किसी अकिंचन रिजाई को अपना दीया बुझाने की नौबत आए।'' संत रिजाई ने अपनी कुटी का दीया बुझाकर सम्पूर्ण जापान के मन में ज्ञान और संवेदना का दीया जलाकर जगमग कर दिया और वह चोर उनका उत्तराधिकारी बनकर आधी शताब्दी से भी अधिक समय तक जापान को आलोकित करता रहा।

स्पष्ट है कि दीपोत्सव व्यक्ति के सहज जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा का पर्व है। दीपावली के दीये लोकजीवन के जागरूक प्रहरी हैं। ये दीये सृष्टि के महासागर के अंतराल के चमकते मुक्ता हैं, उस महासागर के ज्योतिदूत हैं।

दीपोत्सव प्रकाश को अपने प्राणों में बसाकर अंधकार को अलविदा कहने का पवित्र, प्रेरक और प्राणवंत अवसर है। यह भारत की भाग्यलक्ष्मी का साक्षात्कार करके भारतमाता के आँगन में अपने प्राणों और पौरुष के पुष्पों को बिछा देने, स्वयं के बिछ जाने और स्वयं को न्यौछावर कर देने का पर्व है। यह न भूलें कि माँ, भारत माँ की प्रसन्नता, उसकी सुरक्षा और उसकी समृद्धि में ही हम सुरक्षित, समृद्ध और सुखी रह सकेंगे। यदि हम केवल अपनी ढपली बजाते रहें, यदि हम केवल अपने-अपने घरों के दीयों की चिंता करने में ही लगे रहें तो किसी के भी दीये नहीं बचेंगे, किसी के भी घर का उजाला नहीं बचेगा। सब का सब कुछ बचा रहे, बढ़ता रहे, इसलिए सभी को सब की चिंता और सबका चिंतन करना ही होगा। दीपावली के दीयों की तरह सबेरा होने और सूर्य के उदित होने तक अपने लिए ही नहीं, दूसरों के लिए भी जलना होगा, यह केवल दीये की ही बात नहीं है, भारतमाता के दिल की भी बात है।

शब्दार्थ

भंते=सज्जन, महाशय। **साधना**=तपस्या, तप। **विश्लेषण**=किसी बात को सूक्ष्मविधि से समझाना। **प्रतीति**=अनुभव होना। **आस्था**=आदर भाव,विश्वास। **निष्ठा**=ईमानदारी से कार्य करना, श्रद्धा एवं भक्ति, अवधारणा। **उदय**=उत्पन्न होना, पैदा होना। **स्मित**=धीमी हँसी, मंद हास्य। **कायर**=डरपोक। **घटाटोप**=घनघोर, सघन। **आत्मदीप**=आत्मा रूपी दीपक, स्वयं प्रकाशित होना। **प्रकाशोत्सव**=प्रकाश का उत्सव। **उत्तराधिकारी**=जिसे बाद में अधिकार या पद मिला हो। **प्राणवंत**=जीवंत, सजीव। **समाहित**=शामिल करना।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (क) सही जोड़ी बनाइए—

- शरीर – निष्ठा
- करुणा – प्रेम
- प्रतीति – सेवाकर्म
- आस्था – मन

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- क्या आप और हम उस बुढ़ापे, बीमारी और ..... से मुक्त हो गए भंते? (जीवन/मृत्यु)
- घटाटोप अंधकार का अंत करने के लिए एक ..... ही काफी होती है। (चिनगारी/मशाल)
- दीपावली के दीये लोकजीवन के जागरूक ..... हैं। (प्रहरी/दूत)
- ये दीये सृष्टि के महासागर के अंतराल के चमकते ..... हैं। (तारे/मुक्ता)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) आनंद ने बुद्ध से पहला प्रश्न कौन-सा किया?

(ख) बोध प्राप्त करने का क्या आशय है?

(ग) बुद्ध ने अंधकार का क्या कारण बताया है?

(घ) संत रिजाई ने किसे अपना कंबल दिया?

(ङ) न्यायाधीश और संत में क्या रिश्ता था?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) लेखक ने भारतमाता के दिल की बात किस प्रकार स्पष्ट की है?

(ख) ''यदि हम केवल अपने-अपने घरों के दीयों की चिन्ता करने में ही लगे रहे तो किसी के भी दीये नहीं बचेंगे।'' इस वाक्य का आशय समझाइए।

(ग) तथागत ने अन्तर्मन को प्रकाशित करने के लिए कौन-सा उपाय सुझाया?

(घ) संत रिजाई और चोर के संवाद तीन से चार वाक्यों में लिखिए।

(ङ) ''हमें दूसरों के लिए जलना होगा।'' लेखक के इस निष्कर्ष का भाव समझाइए।

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का सही उच्चारण कीजिए—

बौद्ध, विश्लेषण, पराक्रमी, साक्षात्कार, अनुष्ठान, सृष्टि

5. **निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए—**
   सताब्दी, पहरी, निणर्य, आयू, निश्ठा
6. **निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग छाँटकर लिखिए—**
   अपयश, उपवन, पराक्रम, संयोग, अपहरण, उपमंत्री, संग्रह, संतोष, पराजय, अपव्यय, उपनाम, सम्मुख
7. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**
   दबे पाँव आना, उलटे पाँव जाना, अपनी ढपली बजाना, खाली हाथ जाना
8. **दिए गए गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**
   व्यक्ति में जैसे-जैसे विद्या का विकास होता है उतना ही वह नम्र होता जाता है, विद्या-विहीन व्यक्ति का आचरण भी रूखा और शिष्टता विहीन होता है। फलों-फूलों से भरी हुई शाखा झुक जाती है। उसी प्रकार विद्या से संपन्न व्यक्ति भी विद्या पाकर विनम्र हो जाता है। जिस प्रकार थोथे बादल आकाश में ऊँचे मँडराते रहते हैं किन्तु जब वे जल से भरे होते हैं तो भूमि के निकट आकर बरसने लगते हैं।
   - 'ऊँचा' और 'संपन्न' के विलोम शब्द लिखिए।
   - 'नीर', 'सुमन' और 'गगन' शब्द के पर्यायवाची उपर्युक्त गद्यांश में से छाँटिए।
   - उपर्युक्त गद्यांश में से संज्ञा शब्द छाँटिए।
9. **निम्नलिखित शब्दों में से विकारी एवं अविकारी शब्द छाँटिए—**
   पीला, धीरे-धीरे, ऊपर, हमारा, करते हैं।

अब करने की बारी

- संत-महात्माओं के चित्रों का संग्रह कर अलबम बनाइए।
- दीपावली से संबंधित कोई प्रसंग कक्षा में सुनाइए।
- भगवान बुद्ध से संबंधित कथाएँ ''जातक कथाएँ'' कहलाती हैं। कोई अन्य जातक कथा ढूँढकर लाइए और कक्षा में सुनाइए।
- भगवान बुद्ध के दो प्रसिद्ध उपदेश लिखिए और कक्षा में लगाइए।
- दीये को देखकर मिट्टी का दीया बनाने का प्रयास कीजिए।

❑❑